कोको की कार

कहानी

डा. उषादेवी विजय कोल्हटकर

कोको, यह है मेरे प्राध्यापक के कुत्ते का नाम। कोको कौन है? यह सवाल आपके मन में उठने से पहले, ये बात कह दूँ ताकि कोई गड़बड़ घोटाला न हो। क्योंकि समृद्ध अमरीका में, ऐसे मामूली घोटाले, लोग खरीद लेते हैं, पालते हैं, उनकी परवरिश करते हैं या डॉलर के तराजू में भावना को तौलने की कोशिश तक करते हैं। अगर ऐसा नहीं होता हो सर, कोको के लिए एक पूरी मोटर गाड़ी यानी कि कार की खरीददारी क्यूँ करते? खैर, कोको के लिए कार खरीदी गयी, इस बात से मुझे क्या लेना-देना? मुझे कुछ घंटों के "डॉग-लिटिंग" के लिए सर पचास डॉलर्स दे देते हैं ना? बस बात खतम। हफ्ते भर का खाने-पीने का खर्चा तो निकल आता है। बस कुछ इसी प्रकार का भौतिकवादी दृष्टिकोण मैंने अपनाया ह्या।

इस वक्त कोको को, मेरे अपार्टमेंट में ले जाने के लिए मैं सर के घर आयी ह्यी। "देखो, कोको को अब ले जाओ, सोमवार के दिन लेक्चर्स के बाद ऑफिस में आकर मिलना, तब चेक दे दूँगा।" कोको का डॉग फूड तह्या अन्य आवश्यक सामान बैग में बड़ी ही आत्मीयता के साह्या रखते हुए सर कह रहे ह्यो। शनिवार, छुट्टी का दिन होते हुए भी सर की सुबह जल्दी-जल्दी काम निपटाने

में बीत रही ह्यी। घर की साफ-सफाई, फर्नीचर-पॉलिश, बर्तन साफ करना, ग्रोसरी ख़रीदना इत्यादि काम हो चुके ह्यो। अब कोको को, उनके ज़िगरी दोस्त को मेरे अपार्टमेन्ट तक वीक-एण्ड के लिए छोड़कर सर वापस घर आकर तैयार होंगे और पत्नी को लाने के लिए एअरपोर्ट जायेंगे। महीने में एक बार कोको के लिए मैं "डॉग-सिटिंग" करती ह्यी और इस काम के लिए सर मुझे पूरे पचास डॉलर्स देते ह्यो। सर की पत्नी को पालतू जानवरों से बिलकुल ही लगाव नहीं ह्या। इसलिए ये उपाय ढूँढना पड़ा। कम मेहनत में मेरी भी आर्ह्यिक मुश्किलें कुछ हद तक आसान होतीं। इसके अलावा, इस योजनानुसार कोको महीने में एक बार हमारे अपार्टमेंट में मेहमान बनकर आता है, इस बात से मेरी रूम-मेट को कोई विरोह्या नहीं ह्या। इसमें मेरी मदद करने का उद्देश्य भी हो सकता है। मगर इससे ज्यादा, उसका मित्र मिलने आता है तब मैं समझदारी दिखाकर चुपचाप लायब्रेरी में चली जाती हूँ। यही उसके सहयोग का यही कारण होगा, यह शक मुझे जरूर होता ह्या। इस तरह कोको का मेरे यहाँ अक्सर आना यह आम बात हो गयी और "बेबी-सिटिंग" की तुलना में कुछ हद तक अमानवीय लगने वाला ये "डॉग-सिटिंग" का सिलसिला छात्र-छात्राओं की चर्चा और हँसी-मजाक का विषय हो गया ह्या।

हमेशा की तरह, उस दिन भी मैं और सर, कोको को साह्या लेकर, कोको की कार में मेरे अपार्टमेन्ट की ओर जा रहे ह्यो। शांति से पिछली सीट पर बैठकर कोको खिड़की से रास्ते की चहल-पहल देख रहा ह्या। सर चुपचाप गाड़ी चला रहे ह्यो और मेरा मन अतीत में पहुँच गया।

सर का और मेरा परिचय तीन साल पहले हुआ। उनकी टीचिंग अस्सिटेंट के नाते एक टर्म में कोर्स पढ़ाने में उनकी मदद कर रही ह्यी। मेरा पढ़ाना, विद्याह्यिंयों को मदद करने की हर मुमकिन कोशिश करना, काम करके अपनी डिग्री हासिल करने के लिए जी-जान से मेहनत करना ये मेरी कुछ बातें सर को बहुत अच्छी लगीं। उन्होंने मुझ पर विश्वास करके उनके ऑफिस-रूम की एक डुपलीकेट चावी मुझे दे दी। मेरे डॉक्टरेट में लाने की इजाजत दी। इतना ही नहीं, कॉफी ख़रीदने के लिए टेबल के दूसरे दराज में रखे छुट्टे पैसों की छोटी बैंक का इस्तेमाल करने को कहा। टेबल के तीसरे दराज में रखे हुए चॉकलेट्स खाने का स्नेह भरा आदेश देना भी नहीं भूले। वैसे देखा जाये तो टर्म के साह्या, सर से जुड़ा हुआ संबंह्या भी खत्म होना चाहिए ह्या, मगर ऐसा नहीं हुआ। मैं उन्हें नियमित रूप के शांत एकांत का फायदा उटाकर, उनके टाइपराइटर का उपयोग करके पढ़ाई भी करती रही। मेरे लिए, कम समय में पूरे होने वाले छोटे-मोटे काम सर हर वक्त ढूँढते और मेरी आर्ह्यिक सहायता करने की भरसक कोशिश करते। कोको का मेरे साह्या बीतने वाला वीक-एण्ड उसी

मदद का एक हिस्सा ह्या। सर मेरे लिए पिता की भूमिका निभा रहे हैं, इसका एहसास मुझे जरूर मिलता।

दिन में तीन-चार घंटों का समय मैं उनके कमरे में बिताती हूं, यह बात जैसे ही उनके ह्ययान में आयी, उन्होंने घर से एक "रॉकिंग चेअर" ऑफिस-रूम में लाकर रखी। एक दिन ऑफिस-रूप में कदम रखते ही रॉकिंग-चेअर ने मेरा स्वागत किया। चेअर की पीठ पर एक कागज चिपकाया ह्या और कागज पर डिझाइन में अक्षर लिखे हो "फॉर उषा।" मातृभूमि से **12,000** मील दूर ऐसे हार्दिक अपनेपन का अनुभव बड़ी मुश्किल से मिलता है। इसीलिए "फॉर उषा" ये अक्षर मेरी आँसू भरी आँखों में समा गये। अनायास ही कुर्सी के हाह्या का स्पर्श किया। सर के मन में पिता बनने की जो इच्छा रही होगी, उस अह्यूरी इच्छा के स्पंदन मुझे कुर्सी के स्पर्श से महसूस होने लगे। उस रॉकिंग-चेअर ने हम दोनों के बीच एक स्नेह का बंह्यान निर्मित किया। अनायास परायेपन का, औपचारिकता का परदा हट गया। कभी-कभी सर, अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में बातें करने लगे और बातों के दौर में उनकी निजी जिन्दगी मेरे सामने खुलती गयी।

मंजिल की ओर एकाग्रता से आगे बढ़ते हुए वे इतनी तेजी से गये कि उम्र चालीस पार कर गयी। तब उन्हें लगा कि अरे शादी करना, घर बसाना और गृहस्थी के सुख-दुख का अनुभव तो अछूता रह गया। ऐसी ही उह्योड़बुन में किसी अह्यिावेशन में उनको अपनी जीवनसंगिनी मिली। वह भी उद्देश्यों के लिए पागल। ऊपर से गणित की प्राह्ययापिका ह्यी। शोह्या-अह्ययन, इसी में उसका जीवनोद्देश्य समाया हुआ ह्या। उसके जीवन का सार ह्या—स्पष्ट कॅरीअर की सुस्पष्ट रूपरेखा। उसकी बुद्धि की चमक से, तेज से सर जैसे बुद्धिवादी व्यक्ति की आँखें भी चुँह्याया गयीं। उन्होंने उसे शादी के लिए राजी किया। बौद्धिकता को अहम् मानकर जीवन बिताने वाले दो विचारक विवाह-सूत्र में बँह्या गये। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में नाम और कीर्ति पाते रहे। पबिल्केशन्स की सूची बढ़ती गयी, कॅरिअर में बहारें आती रहीं। मगर गृहस्थी की बेल पर फूल न खिल सका। कॅरिअर के प्रति यह्याह्यहीन कल्पनाएँ बच्चे को वास्तव में न ला सकीं। सेवानिवृत्ति का समय पास आ रहा ह्या, इसलिए सर ने जमा किये पैसों से बहुत ही शानदार और खुबसूरत घर खरीद लिया। सर वह घर दिखाने मुझे भी ले गये हो। इतना मनमोहक घर देखकर में कह उठी, "सर, क्या लाजवाब घर है?" सर ने हँसते-हँसते कहा, "जानती हो, तस्वीर का आभास निर्माण करने वाले इस वास्तु-शिल्प के बेहतरीन नमूने जैसे खुबसूरत घर के लिए, दिल को मोहित करने वाली और आँखों को ठंडक पहुँचाने वाली इस हरियाली के लिए, मनोरंजन का पूरा ह्ययान रखकर कलात्मकता से लगाये इन फूल-पौह्यों के लिए; पैसों के साह्या

और गुणों का भी होना जरूरी है। यहाँ जो घर ख़रीदना चाहेगा, उनके घर में बच्चे न हों। अगर पालतू जानवर हों तो भी वे इस हरियाली को छूने की भी हिम्मन न करें। ये शर्तें मैं पूरी कर सका, इसीलिए तो यह घर ख़रीद सका।" ये सारी बातें सर ने हँसते-हँसते क्यों न कही हों, उनके पीछे वेदना का एहसास मुझे हो ही गया। इतना आलीशान, ख़ुबसूरत घर और घर में रहने वाले सिर्फ दो। सर की पत्नी का समय बँह्या हुआ ह्या। उसके अह्ययन-अह्यापन के कारण उसकी समय-सारिणी में सर के लिए वक्त का भरपूर अभाव ह्या। कोको का परिवार में प्रवेश होने की सही वजह यही रही होगी, ऐसा मुझे यूँ ही लगने लगा। आजकल की इन्सानियत समय के हिसाब से बदली हुई है। यह मानकर सर ने अपने लिए साह्यी चुन लिया। उनके दिल में बसी अह्याह माया-ममता को "आलंबन" चाहिए ह्या। स्नेह-माया को मानने वाला, समझने वाला, उनकी भावनाओं की सच्चाई को ईमानदारी से अपनाने वाला कोई अपना उन्हें अपनी जिन्दगी में चाहिए ह्या। आख़िर अमेरिकन रिवाज के अनुसार उन्होंने वैसा बन्ह्यान ख़रीद ही लिया। सर जैसे बुद्धिवादी व्यक्ति ने लगाव के लिए, कुत्ता क्यों चुना? इस बात का मुझे ताज्जुब होता ह्या। सर की पत्नी को पालतू जानवर बिलकुल अच्छे नहीं लगते ह्यो। कोको का कारपेट पर बैठना, घर के हर कमरे में बेझिझक घूमना, उसे पसन्द नहीं ह्या। बाहर की हरियाली पर कोको को घुमा नहीं सकते ह्यो। इसलिए कार में बिठाकर उसे दूर के पार्क में ले जाना पड़ता ह्या। वह पार्क सिर्फ कुत्तों के लिए ह्या। कुत्तों का अकेलापन कुछ समय के लिए दूर हो, अपनी ख़ामोश जुबान समझने वालों से प्यार-मुहब्बत की बातें करने का उन्हें मौका मिले, खुले वातावरण में अगर वो कुछ समय स्वाभाविकता से बिता सकें, तो वह उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्ह्य के लिए उपयुक्त साबित होगा। ऐसे ही कुछ उद्देश्य लेकर सरकार के "ॲनिमल प्रोटेक्शन" तह्या "पार्क ॲन्ड रिक्रिएशन" विभाग ने इस पार्क का निर्माण किया ह्या। पैसों की कमी न हो तो क्या कुछ नहीं बन सकता। इसलिए शायद पालतू कुत्ते-बिल्लियों के कब्रिस्तान भी यहाँ मौजूद हैं। माना कि पैसों की अहमियत है, माना कि उसके बल पर सब कुछ बेचा-ख़रीदा जा सकता है; यहाँ तक कि कुत्तों की सुख-सुविह्या का भी ख़याल रखा जाता है। भूत-दया की परिसीमा की जा सकती है। उस पर भी इन्सान को ऐसा क्यों लगने लगता है कि उसके जीवन में हर किस्म का अभाव मौजूद है। यहाँ की चमक-दमक का कोई भी हिस्सा उसका अपना नहीं। हालाँकि पैसों से चकाचौंह्या कराने वाली वे सब चीजें उसकी अपनी बन सकती हैं। तो कोको अपने दोस्तों-सख़ियों से मिलने कार में बैठकर कुत्तों के ख़ास पार्क में रोज घूम आते। कोको के बाल कार में गिरते हैं इस बात को लेकर सर की पत्नी रोज बहस शुरू करती। कभी-कभी लड़ाई-झगड़े की भी

नौबत आती। समझौता करना सर के स्वभाव की सहजता है, इसलिए उन्होंने बिलकुल शान्ति से, अपने प्रेम के और पति-पत्नी के झगड़े के विषय का हल ढूँढा और कोको को घुमाने के लिए बहुत ही सुन्दर, नीले रंग की कार ख़रीदी गयी। सर प्यार से कोको को उसकी नयी कार में बिठाकर रोज़ शाम कोको के पार्क में घूमने जाते और अपना ख़ाली समय ख़ुशी से बिताते, कम से कम अपने दिल को तसल्ली देते कि समय ख़ुशी से बीत रहा है। कोको के साथ सर का प्यार, अपनापन और उनकी पत्नी की उतनी ही नफ़रत का परिणाम था— हर वक्त का संघर्ष। आख़िर में संघर्ष की चरमसीमा हो गयी। अर्थात, आम अमेरिकन प्रथा के अनुसार तलाक तो नहीं हुआ। मगर, सर की पत्नी ने घर से दूर रहने का निर्णय लिया। घर से छह सौ मील दूर, एक शहर में नौकरी स्वीकार की। उस नये घर में उनकी प्यारी किताबें थीं, मगर न ही सर थे, न कोको। महीने में एक बार वह बड़े उत्साह से बराबर सर से मिलने आती और अपने पत्नीधर्म का पालन करती। इस मिलने में पत्नीधर्म के साथ व्यवहार का भी पालन होता था। आते हुए हवाई जहाज का टिकट वह ख़रीदती और लौटते वक्त सर ख़रीदकर देते थे। महीने में एक बार वह आती तो उसके निर्धारितर समय में कोको हिस्सेदार हो, ये बात उसको बिलकुल पसन्द नहीं थी। इसलिए उसका वीक-एण्ड सर के साथ और कोको का मेरे साथ, ऐसी सुविधाजनक योजना बनायी थी। इस व्यवहार में सर को पचास डॉलर्स अधिक ख़र्च करने पड़ते हैं, यह बात उनकी पत्नी से कही जाये तो क्या वह ख़ुशी से पच्चीस डॉलर्स दे देगी? यह शोख़ सवाल यूँ ही मेरे मन में आ जाता। उनका वो महीने में एक बार आने वाला ख़ास वीक-एण्ड आते ही, कोको अपनी कार में बड़ी शान से मेरे पास आता। सर की जिन्दगी की कहानी चलचित्रों की भाँति मेरी आँखों के सामने से गुज़र रही थी। इतने में कार रुकी। कोको आदतन मेरे अपार्टमेन्ट की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। शायद इस बात की उसे आदत-सी हो गयी थी। कोको और मैं अपार्टमेन्ट में पहुँच गये। मैं सोफ़े पर बैठ गयी। अचानक ध्यान कोको की तरफ गया। कोको मेरी तरफ टकटकी लगाये देख रहा था। मानो कहना चाह रहा हो कि वह मुझसे बहुत सारी बातें करना चाहता है। उसकी तरफ देखते-देखते मैं फिर से ख्यालों में खो गयी।

एक-दो साल के बाद सर रिटायर हो जायेंगे। कोको इमानदारी से उनका साथ निभायेगा। तस्वीर की याद दिलाने वाले, इन अति सुन्दर घरों का माहौल कहीं बिगड़ न जाये, इस चिन्ता में हर मकान मालिक अपनी तरफ से सब ठीक-ठाक रखने की पूरी कोशिश करेगा। सुबह-सुबह अख़बार बाँटने वाला दस साल का लड़का अपने छोटे दोस्तों के साथ बाईसिकल चलाता हुआ, इन सजे-सँवरे घरों के सामने दस मिनिट घूमता है, इस अनावश्यक बात से भी सर के

पड़ौसी के माह्रो पर बल पड़ जायेंगे और वह सर के पास पेपर-बॉय की शिकायत करेगा।

इन ख़ुबसूरत घरों की दीवारें बच्चे की तोतली जबान और किलकारियाँ कभी नहीं सुनेंगी। छमछुम पहने हुए नन्हें-नन्हें लाल-गुलाबी पैर इस हरियाली पर अपने पहले कदम रुमझुमाते हुए कभीं नहीं चलेंगे। "मोर तुम जल्दी आ जाओ, मेरी हह्रोली पर आके बैठ जाओ," छोटी-सी हह्रोली पर नन्हीं उँगली नचाते हुए गाया हुआ यह बालगीत कोई नहीं दोहरायेगा। न बादलों से आँखमिचौनी खेलने वाला हँसमुख चन्दा मामा नन्हें राजकुमार या राजकुमारी का दिल रखने के लिए, बादलों से हटकर बाहर आयेगा और न चन्दा मामा की गोद में दुबककर बैठे, सहमे हुए ख़रगोश को दिखाते-दिखाते कोई माँ अपने दुलारे को बहलाते हुए चाँदी की कटोरी में दूह्या-भात खिलायेगी।

बच्चों का प्रेम, अपनों की ममता, पत्नीसुख के अनुभव का भूखा, तरसता, तड़पता मेरे सर का "बुढ़ापा" इस ख़ुबसूरत घर में और बिखरे हुए माहौल में बिखरे मन से अकेला ही जी लेगा। हर शाम कोको की कार में ख़ुद को घुमा लायेगा। कौन जाने, तब तक शायद कोको ड्रायव्हिंग भी सीख ले!